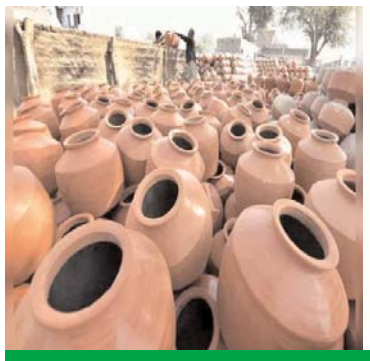

दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच, नई पहल

ग्वालियर वर्ष: 03 अंक: 123 | ग्वालियर, गुरुवार, 07 मई 2020 | पृष्ठ: 08-मूल्य: 2 रु.

शराब की दुकानें खुलीं: खजुराहो में महिलाएं खरीदने पहुंचीं, महीनेभर का स्टॉक किया, जबलपुर में पीकर बहके पियक्कड़

- सरकार और ठेकेदारों के बीच सुलह के बाद प्रदेश में शराब की दुकानें खुलीं, अभी इंदौर-भोपाल-उज्जैन में शटर डाउन रहेंगे
- दो दिन से सरकार और शराब कारोबारियों के बीच तनातनी के बाद अंततः बुधवार दोपहर से प्रदेश में शराब की दुकानें खुल गई

समझौता के बाद मप्र में खुलीं शराब दुकानें सड़क पर बोतल लहराते दिखे 'शराबवीर'

- आश्वासन के बाद कारोबारी दुकानें खोलने राजी हुए, मामला हाईकोर्ट तक पहुंच गया, सरकार दो सप्ताह में पेश करेगी जवाब
- होशंगाबाद जिले के सिवनी मालवा तहसील में शराब खरीदने पहुंचे लोगों की अंगुली में चुनाव वाली नीली स्याही लगाई गई
- रीवा में जैसे ही दोपहर शराब की दुकाने खुलीं तो खरीददारों की आधा किमी की लाइन लग गई, पुलिस देखती रही तमाशा

लोकदेश संवाददाता ■ भोपाल

राज्य सरकार से शराब कारोबारियों को मिले आश्वासन के बाद बुधवार दोपहर से प्रदेश में शराब की दुकानें खुल गईं। दुकानों के खुलने की जानकारी लोगों लगी तो भीड़ जुट गई। खजुराहो में महिलाओं ने लाइन में लगकर शराब खरीदी तो कई लोग महीनेभर का स्टॉक खरीदकर ले गए। जबलपुर में शराब पीकर लोग सड़क पर तमाशा करते नजर आए। आलम यह था कि शराब दुकानों के बाहर लंबी-लंबी कतारें लग गईं। भीड़ को संभालने के लिए पुलिस बल को तैनात करना पड़ा। करीब 40 दिनों बाद खुली शराब दुकानों से शराब लेने वालों में खुशी का आलम ऐसा था कि कुछ लोग तो दुकान के बाहर ही बोतल के साथ नाचने गाने लगे। कई लोग तो एक साथ शराब की कई बोतलें ले गए। कुछ चोरी छिपे तो कुछ ने खुलेआम शराब खरीदी। दरअसल, दो दिन से सरकार और शराब कारोबारियों के बीच तनातनी के बाद अंततः बुधवार दोपहर से प्रदेश में शराब की दुकानें खुल गईं। सरकार से मिले आश्वासन के बाद कारोबारी दुकानें खोलने राजी हुए हैं। मामला हाईकोर्ट तक पहुंच गया है। सरकार को दो सप्ताह में जवाब देना है। बुधवार को शराब कारोबारियों और आला अधिकारियों की बैठक के बाद दुकानें खोलने का निर्णय हुआ। सरकार ने ठेकेदारों की मांग पर तीन-चार दिन में विचार करने का आश्वासन दिया है। फिलहाल, लॉकडाउन के कारण सरकार ने सिर्फ ग्रीन जोन की दुकानें और ऑरेंज जोन में कंटेनमेंट एरिया के बाहर की दुकानें खोलने की छूट दी है।

ठेकेदारों की मानी मांग

प्रदेश के ग्रीन जोन वाले 24 जिलों में शराब की दुकान खोलने को लेकर शराब ठेकेदार तैयार हो गए हैं। बीते दो दिन से सरकार और शराब ठेकेदारों के बीच बनी तकरार बुधवार को बैठक के बाद खत्म हो गई है। आबकारी विभाग के अफसरों के रुख के बाद शराब ठेकेदारों ने तत्काल शराब दुकान खोलने का फैसला लिया है। शराब ठेकेदारों ने सरकार से इस बात की मांग की थी कि जितना माल बेचा जाए उतनी ही ड्यूटी लगाई जाए। साथ ही बीते दो महीने में जो नुकसान हुआ है उसके कोटे से उन्हें बंधन मुक्त किया जाए। सरकार का आश्वासन मिलते ही ठेकेदारों ने अनुमति वाले सभी इलाकों में तत्काल शराब की दुकानें खोलने का ऐलान कर दिया।

ठेकेदारों के सुझाव

ठेकेदारों ने आबकारी विभाग के अपर मुख्य सचिव और आयुक्त से चर्चा में कहा कि शराब दुकानों से जितनी शराब बिके, सरकार ठेकेदार से उतना ही पैसा ले। यह भी सुझाव दिया गया कि वर्ष 2020-21 में 25 प्रतिशत अधिक बोली लगाई गई है। इसे चालू साल में वापस लिया जाए और वर्ष 2019-20 की लाइसेंस फीस पर शराब बिक्री की अनुमति दी जाए। इसके बाद 2021-22 में शराब का ठेका दो साल के लिए दे दिया जाए और उसमें 25 प्रतिशत या जो भी सरकार बढ़ोतरी करना चाहे वो कर सकती है। जो ठेकेदार दुकान चलाने की स्थिति में नहीं हैं, उन्हें ठेका छोड़ने की अनुमति दी जाए। शराब दुकान खोलने पर शराब की खेप ले जाने और कर्मचारियों के आने-जाने के लिए पास बनाने की अनुमति आबकारी विभाग को दी जाए।

कहां-कहां खुली दुकानें

मध्य प्रदेश सरकार ने अभी केवल ग्रीन और ऑरेंज जोन वाले जिलों में ही शराब दुकानें खोलने का फैसला किया है। प्रदेश के 9 जिले अभी भी रेड जोन में हैं जिसमें राजधानी भोपाल भी शामिल है। भोपाल में शराब दुकानें तो नहीं खोली गई लेकिन भोपाल से लगे मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र में दुकानें खुल गईं। शराब दुकानें खुलने का समय सरकार ने सुबह 7 से शाम 7 बजे तक तय किया है। गुरुवार से दुकानें अब इसी समय पर खुलेंगी।

शासन की ओर से शराब खरीदारों की अंगुली पर स्याही लगाने के कोई निर्देश नहीं हैं। परंतु शराब दुकान पर भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से हमने अपने अनुभाग में यह व्यवस्था की है। इससे एक बार शराब ले जाना वाला व्यक्ति दोबारा कतार में लगकर व्यवस्था भंग नहीं करेगा।

रविशंकर राय, एसडीएम, सिवनी मालवा

रतलाम के सहायक आबकारी आयुक्त निलंबित

इधर, राज्य सरकार ने लॉकडाउन अवधि के दौरान अवैध मदिरा विक्रय के विरुद्ध कार्रवाई में बरती गई लापरवाही के फलस्वरूप जिला रतलाम के सहायक आबकारी आयुक्त जगदीश राठी को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया है। निलंबन अवधि में राठी का मुख्यालय उपायुक्त आबकारी, संभागीय उड़नदस्ता, उज्जैन रहेगा और उन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता प्राप्त करने की पात्रता होगी।

भोपाल में कोरोना के 18 नए मरीज मिले, एक की मौत, इंदौर में ठीक होकर घर लौटे 21 मरीज

प्रदेश में 3138 संक्रमित और 185 की मौत नीमच और झाबुआ पहुंचा कोरोना वायरस

- भोपाल में सबसे ज्यादा संक्रमित जहांगीराबाद में मिले, यहां कैंप लगाकर संदिग्ध के ले रहे सैंपल
- सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं होने से मध्यप्रदेश में संक्रमण फैलने का ज्यादा खतरा मंडरा रहा

■ शिवपुरी की मंडी में 200 सब्जी विक्रेताओं की हुई स्क्रीनिंग ■ इंदौर में कोरोना पॉजिटिव की संख्या 1681 पर पहुंची ■ भोपाल में 627 और उज्जैन में 212 संक्रमित मरीज

लोकदेश संवाददाता ■ भोपाल

मध्य प्रदेश में कोरोना वायरस पॉजिटिव मरीजों की संख्या 3138 के ऊपर पहुंच चुकी है। यहां इससे 185 लोगों की मौत हो चुकी है और 640 स्वस्थ होकर लौट चुके हैं। इंदौर में 1681 और भोपाल में 627 संक्रमित हैं। हालात सामुदायिक संक्रमण जैसे हैं। जिन 43 जिलों में लॉकडाउन में ढील दी गई, वहां सोशल डिस्टेंसिंग नदारद है। प्रदेश में रोज 3 हजार सैंपल लिए जा रहे हैं। प्रदेश के उज्जैन में 14 नए और रतलाम में 4 नए कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं। शिवपुरी की थोक सब्जी मंडी में बुधवार सुबह स्वास्थ विभाग की टीम ने 200 विक्रेताओं की स्क्रीनिंग की और 10 संदिग्धों को अपने साथ ले गई। भोपाल में बुधवार को कोरोना के 18 नए संक्रमित मिले। अधिकांश मरीज पुराने भोपाल के रहने वाले हैं। इसके अलावा हमीदिया अस्पताल में एक मरीज की मौत की पुष्टि हुई है। वहीं कोरोना संक्रमण नीमच पहुंच गया। मंगलवार देर रात मिली रिपोर्ट में दो क्षेत्रों से चार लोग पॉजिटिव मिले। कलेक्टर जितेंद्र सिंह राजे ने नगरीय क्षेत्र में कर्फ्यू के निर्देश दिए। झाबुआ जिले में भी पहला केस सामने आया। नीमच में गत सप्ताह इसी परिवार में आए दाहोद निवासी मेहमानों में से 7 सदस्य कोरोना पॉजिटिव निकले थे। सूचना पर नीमच का संबंधित क्षेत्र कंटेनमेंट क्षेत्र बना दिया गया था। रात मिली 46 रिपोर्ट में से 41 निगेटिव, 1 रिजेक्ट व 4 पॉजिटिव आई हैं। खास बात यह है कि इन चारों पॉजिटिव लोगों में वायरस के एक भी लक्षण नहीं पाए गए। कर्फ्यू लगते ही अफीम तौल नहीं हो सकी।जिले के पेटलावद के गांव नाहरपुरा की महिला की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। नाहरपुरा क्षेत्र को कंटेनमेंट एरिया घोषित कर स्वास्थ्य टीम भेजी गई है। महिला के घर को सील कर दिया गया है।

भोपाल। लॉक डाउन के बीच भोपाल टाकिज चौराहे पर एक चार पाहिया वाहन को पुलिस ने पकड़ा और उसमें बैठे चार लोगों का मोबाइल से वीडियो बनाया। वाहन चालक ने पांच सौ रुपए का चालन बनवाया और रवाना हुए।

उज्जैन में 14 पॉजिटिव मिले

उज्जैन जिले में कोरोना संक्रमण से मौतों का सिलसिला जारी है। बुधवार को दो और मौतें दर्ज हुईं। इसके साथ ही मृतकों का आंकड़ा 42 तक पहुंच गया। 14 नए पॉजिटिव केस भी आए। इन्हें मिलाकर अब तक जिले में 201 मामले सामने आ चुके हैं। इनमें से तीन मरीज रतलाम जिले में पाए गए थे। नए मामलों में 4 बड़नगर और शेष उज्जैन शहर के कंटेनमेंट इलाकों के हैं। बीते 17 दिनों में 34 मौतें दर्ज की गई हैं, वहीं पॉजिटिव केस भी बढ़े हैं।

रतलाम में चार नए केस

रतलाम जिले में चार नए कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले। मंगलवार देर रात आई रिपोर्ट में जावरा रोड कंटेनमेंट क्षेत्र के तीन पुरुष, एक महिला की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। इसके साथ ही जिले में कोरोना मरीजों की संख्या 7 हो गई है। इसके पहले 12 मरीज स्वस्थ होकर घर जा चुके हैं। एक अन्य मरीज का उज्जैन में इलाज चल रहा है। नए मरीज कंटेनमेंट क्षेत्र से ही हैं।

इंदौर में 1681 कोरोना पॉजिटिव

इंदौर में कोरोना वायरस पॉजिटिव मरीजों की संख्या 1681 पहुंच गई है, अब तक यहां इससे 81 लोगों की मौत हो चुकी है और 491 स्वस्थ होकर लौट चुके हैं। देर रात आई रिपोर्ट के अनुसार इंदौर में 27 नए पॉजिटिव मरीज मिले हैं। दो मौतों की पुष्टि भी हुई है। रामबाग निवासी 36 वर्षीय युवक की मृत्यु की पुष्टि हुई है वहीं एक मधू निवासी 75 वर्षीय वृद्ध की मौत हुई है। स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट अनुसार सैंपलिंग की संख्या बढ़ा दी गई है।

डिंडोरी: पॉजिटिव किशोर की रिपोर्ट निगेटिव

डिंडोरी जिले के लोगों के लिए बुधवार को बड़ा राहत भरा समाचार सामने आया है। जिले के एकमात्र कोरोना पॉजिटिव किशोर की अंतिम रिपोर्ट भी निगेटिव आई है। गौरतलब है कि जनपद मुख्यालय करंजिया निवासी 15 वर्ष किशोर मुर्शिद खान की कोरोना जांच रिपोर्ट 20 अप्रैल को पॉजिटिव आने से जिलेभर में हलचल बढ़ गई थी।

खरगोन-शाजापुर में भी नए केस

खरगोन जिले में बुधवार को एक व्यक्ति की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई। रामेश्वर टॉकीज क्षेत्र में रहने वाले इस व्यक्ति की 15 अप्रैल को मौत हो चुकी है। अब तक जिले में 80 लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं और आठ लोगों की मौत हो चुकी है। शाजापुर जिला अस्पताल में पदस्थ गांव अभयपुर निवासी सफाईकर्मी की कोरोना पॉजिटिव रिपोर्ट आई है। सफाईकर्मी के स्वजनों को क्वारंटाइन किया गया है। आगर के बड़ौद में एक कोरोना पॉजिटिव मरीज मिला। जिले में कुल संख्या 13 हो गई है। इनमें से एक की मौत हो चुकी है। 10 लोग स्वस्थ होकर घर जा चुके हैं।

जबलपुर में तीन नए पॉजिटिव

जबलपुर में रात एनआईआरटीएच से जारी रिपोर्ट में कोरोना के 3 नए मरीज सामने आए। सोमवार रात सागर मेडिकल कॉलेज अस्पताल से जारी 50 सैंपल की रिपोर्ट में शंकर नगर माढ़ोताल निवासी ईशान काछी (6) एवं दरहाई सराफा निवासी ज्योति राठौर (50) को कोरोना पॉजिटिव पाया गया था। इस प्रकार जिले में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या 108 हो गई है।

खंडवा में 15 हुई कोरोना पॉजिटिव की संख्या

खंडवा की मक्का मस्जिद में कर्नाटक के जमातियों के संपर्क में आए 30 नमाजियों में से 9 और एक अन्य मरीज की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। इन्हें मिलाकर शहर में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या 15 हो गई है। सरकार की गाइडलाइन के चलते 10 से अधिक पॉजिटिव मरीज होने पर जिला ऑरेंज से रेड जोन में पहुंच गया है।

डराने लगा है कोरोना का बढ़ता ग्राफ, 3 दिन में 40 हजार से 50 हजार हुए मामले

नई दिल्ली। कोरोना वायरस संक्रमण का बढ़ता ग्राफ और भी ज्यादा भयावह होता दिख रहा है। देश में कोविड-19 के पॉजिटिव केसों की संख्या 50 हजार पार कर गई है और हैरान करने वाली बात है कि पिछले 3 दिनों में कोरोना संक्रमण बढ़ने की रफ्तार अब तक सबसे तेज रही है। सिर्फ 3 दिन में कोरोना वायरस के मामले 40 हजार से बढ़कर 50 हजार पार कर गए हैं। रविवार यानी 4 मई को देश में कोरोना वायरस के पॉजिटिव केसों की संख्या जहां 41 हजार थी, वहीं 6 मई को बढ़कर 50 हजार पार कर गया। कोरोना के इस प्रसार पर नजर डाले तो पाएंगे कि लगभग 11 दिनों के दौरान दोगुने आंकड़े आए हैं। कोरोना वायरस ने देश में सबसे ज्यादा महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली को प्रभावित किया है। बुधवार को कोरोना के 3,490 नए मामले और 98 मौतें दर्ज की गईं, जिससे देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या 52967 पहुंच गई और 1711 लोगों की मौत हो चुकी है। कोरोना वायरस के आंकड़ों पर नजर डालें तो बीते तीन दिनों में ही 10 हजार मामले दर्ज किए गए हैं। वहीं, 30 हजार से 40 हजार पहुंचने में पांच दिन का समय लगा था। कोरोना वायरस के 20 हजार से 30 हजार मामले में सात दिनों का समय लगा था। इसके अलावा, भारत को मार्च से शुरुआती 10 हजार का आंकड़ा छूने में करीब 43 दिनों का समय लगा था। बता दें कि सबसे पहले जनवरी में केरल में कोरोना का पहला मामला सामने आया था।

ये राज्य सबसे अधिक प्रभावित-महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पंजाब, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल आदि ऐसे राज्य हैं, जहां एक हजार से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। महाराष्ट्र में कोरोना संक्रमितों की संख्या 16758 हो गई है और दस हजार के करीब मामले तो सिर्फ मुंबई में हैं।

विशाखापट्टनम में केमिकल प्लांट से जहरीली गैस लीक, एक बच्चे समेत 3 की मौत

विशाखापटनम। आंध्र प्रदेश में एक केमिकल प्लांट से जहरीली गैस के रिसाव होने खबर है। विशाखापट्टनम के आरएस वेंकटपुरम गांव में एलजी पॉलिमर इंडस्ट्री प्लांट में केमिकल गैस के लीक होने से तीन लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि इन तीन में एक बच्चा भी है। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, गैस रिसाव के चलते आंखों में जलन और सांस लेने में तकलीफ की शिकायत के बाद लोगों को अस्पताल ले जाया जा रहा है। मौके पर पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची हुई है। बताया जा रहा है कि कई लोग अस्पताल में भर्ती किए जा रहे हैं।

सीहोर में मां और उसकी शादीशुदा बेटी की हत्या

सीहोर। यहां वीरपुर डैम रोड स्थित फ्रीगंज में घर में सोते वक्त शादीशुदा बेटी और उसकी मां की हत्या कर दी गई। घटना सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात की है। पुलिस ने दामाद को हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। उसका कहना है कि रात में वह घर नहीं गया। बताया जा रहा है कि छोटी बच्ची ने पुलिस को बताया कि पापा मम्मी की छाती पर बैठकर मार रहे थे। मंगलवार सुबह 9.30 बजे डायल 100 पर सूचना मिली कि बिलकिसगंज के पास फ्रीगंज मोहल्ला में दो लोगों की हत्या हो गई। पुलिस मौके पर पहुंची तो देखा कि बाहर वाले कमरे में 26 साल की सुमन मृत अवस्था में पड़ी है। अंदर वाले कमरे में सुमन की मां लीलाबाई (45 साल) का शव पड़ा था। लीलाबाई की गर्दन पर बांई तरफ कुल्हाड़ी से हमला करने का घाव था। पुलिस ने पड़ोसियों से घटना को लेकर पूछताछ की। लेकिन, कोई सुराग नहीं मिला। हालांकि, संदेह के आधार पर पुलिस ने सुमन के पति राजमल राठौर को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। लेकिन, देर शाम तक पुलिस हत्या की वजह नहीं बता सकी। बताया जाता है कि सुबह राजमल का भाई दूध लेकर वहां गया था। सबसे पहले उसने देखा कि घर में दोनों की हत्या हो गई। इसके बाद उसने राजमल और अन्य को बताया।

कोरोना की आहट? पश्चिम बंगाल में सांस-इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी के 92,000 रोगी मिले

ममता सरकार ने बदली रणनीति

कोलकाता। पश्चिम बंगाल सरकार ने राज्य में इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी के 92,000 से अधिक मामले और सांस रोग के 870 मामलों की पहचान की है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि कोविड-19 के मद्देनजर ये मामले शुरुआती चेतावनी के संकेत हो सकते हैं। ममता बनर्जी ने कहा कि ये परिणाम उनकी सरकार द्वारा बीते एक महीने से अधिक समय में किए गए घर-घर निगरानी के प्रयासों का फल है। उन्होंने कहा कि यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब तक कि यह कोरोना वायरस परास्त नहीं हो जाता। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने फेसबुक पर एक पोस्ट में कहा कि बीते एक महीने से भी अधिक समय से घर-घर जांच का एक गहन अभियान छेड़ा गया, जिसमें श्वसन संबंधी गंभीर बीमारी (एसएआरआई) तथा इन्फ्लूएंजा के मामलों की पहचान की जा रही है।

ममता सरकार ने रणनीति बदली- कोविड-19 महामारी से कथित रूप से अकुशलता से निपटने को लेकर आलोचना से घिरी पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने परीक्षण कई गुना बढ़ाकर, कोरोना वायरस मौतों पर ऑडिट समिति के क्षेत्राधिकार में बदलाव लाकर और लॉकडाउन उपायों को कड़ा करके रणनीति बदली है। तृणमूल के शीर्ष नेताओं के अनुसार, रणनीति में बदलाव लोगों में बढ़ते असंतोष, कम परीक्षण और कमजोर निगरानी को लेकर केंद्र की टीमों की तीखी टिप्पणी जैसे कारणों के चलते किया गया। यह तृणमूल के लिए अगले साल विधानसभा चुनाव में महंगा साबित हो सकता था।

बुद्ध पूर्णिमा पर आज कोरोना योद्धाओं का होगा सम्मान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी होंगे कार्यक्रम में शामिल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज गुरुवार को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर कोरोना योद्धाओं के सम्मान में होने वाले एक कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे और समरोह को संबोधित करेंगे। यह कार्यक्रम कोरोना योद्धाओं के सम्मान में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ के सहयोग से संस्कृति मंत्रालय की ओर से आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में एक वर्चुअल प्रार्थना होगी। इसी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाषण देंगे। साथ में कोरोना योद्धाओं का सम्मान भी किया जाएगा। न्यूज एजेंसी एएनआई ने प्रधानमंत्री कार्यालय के हवाले से कहा है कि यह आयोजन कोरोना पीड़ितों के सम्मान और कोविड-19 फंटलाइन वॉरियर के लिए आयोजित किया जा रहा है।

वहीं, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर बुधवार को देशवासियों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि भगवान बुद्ध का सत्य, शांति और करुणा का संदेश सदैव मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा।

राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा, बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर मैं सभी नागरिकों और पूरी दुनिया में भगवान बुद्ध के अनुयायियों को शुभकामनाएं देता हूं। भगवान बुद्ध का संदेश हमें प्रेम, सत्य, करुणा और अहिंसा के साथ मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। कोविंद ने कहा कि उनका जीवन और आदर्श समानता, सद्भाव और न्याय जैसे शाश्वत मूल्यों में हमारे विश्वास को सुदृढ़ करता है। राष्ट्रपति ने कहा कि ऐसे समय में, जब हम कोविड-19 के रूप में एक अभूतपूर्व संकट का सामना कर रहे हैं, हमें जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए आगे आना चाहिए और इस तरह भगवान बुद्ध के दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह पवित्र त्योहार हमें भगवान बुद्ध की शिक्षा का पालन करने और हमारे बीच सद्भाव की भावना को मजबूत करने के लिए प्रेरित करता है। उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर देशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि सम्यक आचरण में भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांग मार्ग तथा व्यवहार में पंचशील के अनुसरण से ही मानवता संसार के चार आर्य सत्यों का समाधान कर, आध्यात्मिक उत्कर्ष प्राप्त कर सकती है। कोविड-19 के दौरान भगवान बुद्ध के संदेश को और प्रासंगिक बताते हुए उन्होंने कहा, भगवान बुद्ध का सत्य, शांति और करुणा का संदेश सदैव मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सहिष्णुता से समाज को संगठित रखें, सहानुभूति के भाव से जरूरतमंदों की हर संभव सहायता करें। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बुद्ध पूर्णिमा की पूर्वसंध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी और कहा कि महात्मा बुद्ध का जीवन और उनकी शिक्षा मानवजाति को भारत की ओर से दिया गया एक अनुपम उपहार है तथा उनके अहिंसा, सत्य, निस्वार्थ सेवा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आदर्श समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के इस कठिन समय में आइए हम सब बुद्ध के साधना और ध्यान के बंधनमुक्त करने वाले विचारों का स्मरण करें जिससे हमें कोरोना वायरस का मुकाबला करने की प्रेरणा मिलेगी।

संपादकीय

उकसावे के कदम

पाकिस्तान की बौखलाहट अब ज्यादा इसलिए भी बढ़ रही है कि पिछले साल भारत ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी कर इसे केंद्रशासित प्रदेश बना दिया था। भारत के इस कदम से पाकिस्तान सकते में है। पड़ोसी देश पाकिस्तान लगातार ऐसे उकसावे वाले काम कर रहा है, जिनसे दोनों देशों के बीच तनाव तीखा हो सकता है। शांति की जो कुछ उम्मीदें बची हैं, वे भी इस तरह के विवादों से धूमिल पड़ सकती हैं। हाल में पाकिस्तान ने जानते-बूझते एक बार फिर गिलगित-बाल्टिस्तान को लेकर गतिविधियां शुरू कर दीं। इस क्षेत्र में चुनाव कराने के पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद दोनों देशों के बीच फिर एक और मोर्चे पर तनाव पैदा हो गया है। हकीकत क्या है, इससे पाकिस्तान की न्यायपालिका भी वाकिफ है, लेकिन फिर भी इस तरह के फैसले अगर आते हैं तो इसमें निहित मंशा को समझ पाना मुश्किल नहीं है। इसीलिए भारत ने अपनी तत्काल कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पाकिस्तान को चेतावनी भरे शब्दों में गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र खाली करने को कह दिया है। भारत ने पाकिस्तान उच्चायोग के अधिकारी को बुला कर स्पष्ट रूप से अपनी नाराजगी जाहिर की और वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया है। हालांकि पाकिस्तान की फितरत को देखते हुए लगता यही है कि अब वह अपनी सर्वोच्च अदालत के फैसले पर अमल की दिशा में बढ़ेगा। ऐसा इसलिए भी कि जैसी खबरें अब तक आती रही हैं, उनके मुताबिक प्रधानमंत्री इमरान खान पर सेना भारी पड़ रही है। ऐसे में इमरान खान के लिए पीछे हटना मुश्किल होगा। भारत के कुछ क्षेत्रों को लेकर पाकिस्तान ने दशकों से ऐसे विवाद छेड़ रखे हैं जो न केवल दोनों देशों, बल्कि क्षेत्रीय शांति के लिए भी बड़ा खतरा बन गए हैं। ऐसा नहीं कि विवाद सिर्फ कश्मीर को लेकर है। गुजरात के कच्छ क्षेत्र में जल सीमा के नजदीक सरक्रीक और कश्मीर से सटा गिलगित भी ऐसे ही इलाके हैं, जिनको लेकर पाकिस्तान विवाद करता रहा है। सवाल है कि गिलगित क्षेत्र को लेकर पाकिस्तान सच को क्यों नहीं स्वीकार करता। गिलगित-बाल्टिस्तान को लेकर ब्रिटिश संसद भी पाकिस्तान के खिलाफ प्रस्ताव पास कर इस क्षेत्र को भारत का अभिन्न हिस्सा बता चुकी है। हकीकत यही है कि पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित-बाल्टिस्तान भारत के ही अभिन्न हिस्से हैं, जिन पर फौजी ताकत के बल पर पाकिस्तान का कब्जा है और इन क्षेत्रों के लोगों का पाकिस्तान दशकों से दमन करता आ रहा है। पाकिस्तान ने 1947 में कश्मीर के जितने हिस्से पर कब्जा किया था, उसी में से एक पाक अधिकृत कश्मीर और दूसरा गिलगित-बाल्टिस्तान है। पाकिस्तान की बौखलाहट अब ज्यादा इसलिए भी बढ़ रही है कि पिछले साल भारत ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी कर इसे केंद्रशासित प्रदेश बना दिया था। भारत के इस कदम से पाकिस्तान सकते में है। उसे लग रहा था कि सत्तर साल से भारत चुप बैठा है और वह कुछ कर नहीं पाएगा। लेकिन भारत सरकार के कठोर कदम से उसे अब लग रहा है कि कहीं पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित-बाल्टिस्तान को लेकर भी भारत सरकार ऐसा ही कोई कठोर कदम न उठा ले। इसमें कोई शक नहीं कि गिलगित-बाल्टिस्तान जैसे मुद्दे को हवा देकर पाकिस्तान इन दिनों भारत-पाक सीमा पर संघर्षविराम उल्लंघन पर से ध्यान हटाने की कोशिश में लग गया है। कश्मीर में जिस तरह से आतंकी हमले तेज हुए हैं, उनसे साफ है कि बिना पाकिस्तानी मदद के ये संभव नहीं हैं।

बंदी और जरूरत का पैमाना

शीतला सिंह

शराब मानव जीवन और समाज में कैसी भी लाभदायक या नुकसानदेह भूमिका निभा रही हो, सरकार द्वारा पूर्णबंदी में उसके ठेके खोलने का कदम राजस्व आय के सहायक के रूप में उसका उपयोग करने और पूर्णबंदी के आर्थिक प्रभावों को थोड़ा कम करने के लिए उठाया गया है। इसके लिए यह भी ध्यान नहीं रखा गया कि इसके लतियों से मास्क और सुरक्षित दूरी के अनिवार्य प्रतिबंधों का पालन कैसे कराया जाएगा। इसी कारण दिल्ली में कई जगहों पर सुरक्षित दूरी के उल्लंघन के चलते ठेकों को खुलते ही बंद कर देना पड़ा। सवाल मौजूं है कि सरकार नशेड़ियों के लिए शराब की उपलब्धता की व्यवस्था में राजस्व लाभ के सिद्धांत को स्वीकृति देगी और राज्य संचालन में महामारी के दौर में भी इस प्रकार की प्रवृत्तियों को बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू करेगी, तो समाज में क्या, किस आदर्श का और कैसा नैतिक संदेश जाएगा? फिलहाल तो इस कदम को अवसरवादी राजनीति के अंग के रूप में ही देखा जाएगा, जिसमें संकट की इस घड़ी में भी राज व्यवस्था की शक्तियों का प्रयोग सरकारी आमदनी बढ़ाने के ऐसे साधन के रूप में किया जा रहा है, जिसे न तो संविधान ने स्वीकारा है, न ही जीवन के आदर्शों के रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

इस निर्णय से यह प्रश्न उठता है कि प्राथमिकताओं के आधार पर जनता के जीने और उसकी आवश्यकताओं या इनका निर्धारण सरकार को मिलने वाली अधिकतम आमदनी पर आधारित होगा। इसी रूप में जिन्हें नशीली वस्तुएं कहा जाता है, जिन पर अंकुश लगाने की प्रक्रिया तेज होनी चाहिए, उन पर गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार जैसे कई राज्यों में अंकुश भी लग चुका है। उन्हें ढोल-धमाके के साथ ही सुबह दस बजे से शाम सात बजे तक इसलिए खोला जाएगा कि खरीदने वाले अधिकतम संख्या में उसका लाभ उठा सकें।

मध्य प्रदेश जैसे शराब बंदी वाले राज्य में नई दुकानें खुलवाने का निर्णय नई स्थितियों के लिए व्यवस्था बना कर और ठेके खोल कर ही संभव थी। यह कहा जा सकता है कि पेट्रोल और डीजल पर लगने वाले वैट की दरों में भी वृद्धि की गई जो सकल सरकारी आय का लगभग तीस प्रतिशत की पूर्ति करते हैं। लेकिन मूल प्रश्न तो यही है कि राज्य नामक संस्था और उसकी संवैधानिक व्यवस्था भावी समाज का ऐसा स्वरूप बनाने के लक्ष्य पर निर्धारित होती है जिससे अधिकतम लोगों को लाभ हो सके और सामाजिक दृष्टि से जिसका प्रभाव व्यवस्था को उत्तम बनाने और ऐसा स्वरूप प्रदान करने वाला हो जो निर्धारित अपेक्षाओं के अनुकूल हो। लेकिन इस निर्णय से शराब की दुकानें पूरे देश में खोलने के निर्णय से यही लगता है कि अधिकतम लाभ की खोज में समाज को हम किस ओर ढकेलने जा रहे हैं। इसलिए यदि इस प्रश्न पर संविधान और विवेक की दृष्टि से थोड़ा अंकुश की प्रवृत्ति ही अपनाई जाती तो उचित होता।

बिहार जैसे कई राज्यों की सरकारों ने इनको मानव जीवन के लिए न सिर्फ अनावश्यक, बल्कि हानिकारक मानते हुए कई तरह के प्रतिबंध लगा रखे हैं। लेकिन चालीस दिनों बाद पूर्णबंदी के तीसरे चरण में इन्हें जनसामान्य को उपलब्ध करने की आवश्यकता अनुभव की गई और शराब के ठेकों सहित इनकी दुकानें खोल कर संचालित करने की ऐसी व्यवस्थाएं की गई, ताकि दो व्यक्तियों के बीच सुरक्षित दूरी का नियम और उसका पालन होता रहे। बिहार और महाराष्ट्र को छोड़ कर पूरे देश में इनके सुबह दस से शाम सात बजे तक संचालित रहने की अनुमति दी गई। इससे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यही निकलता है कि संभवतः ये मानवीय जीवन की आवश्यकताओं में शामिल हैं, जिसके चलते इनकी सुलभता को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इन ठेकों और दुकानों के खुलने से पहले ही उनके सामने लग गए खरीदारों के रेले से भी यही लगता है कि इनके बारे में पूर्णबंदी लागू करते वक्त किया गया मूल्यांकन वास्तविकताओं पर आधारित नहीं था। देश के संविधान में शराब जैसी नशीली वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने की भी चर्चा है।

तमिलनाडु, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों ने सबसे पहले इस दिशा में कदम उठाए थे, लेकिन कुछ लोग इसे पीने को अपनी अनिवार्य आवश्यकता बता कर मामले को सर्वोच्च न्यायालय ले गए। वहां से निर्देश जारी हुआ कि उनकी अनिवार्यता को ध्यान में रख कर इसकी उपलब्धता के लिए परमिट प्रणाली शुरू की जाए, ताकि सरकारी एजेंसियों और डॉक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार, जिनके लिए इन्हें आवश्यक माना गया है, वे इसे खरीदकर पी सकें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीवन की अनिवार्य आवश्यकता तो क्या, दवा के रूप में भी शराब के सेवन को नकारते थे। गांधी जी के जो वारिस गांधीवादी समाज व्यवस्था बनाने का दावा करते थे, उन्होंने इस पर प्रतिबंध को संवैधानिक आवश्यकता समझ कर इसके लिए सत्ता की शक्तियों का प्रयोग भी किया। वर्तमान स्थिति के मूल्यांकन के अनुसार इसकी सर्वस्वीकार्यता और अनिवार्यता स्वीकारने के बजाय ठेके और परमिट के आधार पर इसकी उपलब्धता की व्यवस्था की गई, जो फिलहाल केंद्र और राज्य सरकारों की आय का प्रमुख स्रोत है। पहले जो उत्पाद शुल्क इसके उपयोग को हतोत्साहित करने के लिए शुरू किया गया था, आज की तारीख में उस पर सरकारों की निर्भरता ही अनिवार्य-सी हो चली है।

दूसरे पहलू पर जाएं तो मौजूदा परिस्थितियों में कोरोना महामारी से निपटने के लिए विभिन्न वर्गों व समुदायों पर तरह-तरह के प्रतिबंध लगाए गए हैं। इनमें धार्मिक आस्थाओं व विश्वासों वाले पूजा-अर्चना के स्थानों पर भीड़ रोकने के लिए प्रतिबंध लगा कर उन्हें बंद भी किया गया। ऐसा प्रतिबंध शराब पर भी लगा, लेकिन उसमें अदालत द्वारा निर्णित श्रेणी में आने वालों को इसकी सुविधाओं से वंचित करने का प्रावधान नहीं था, उपलब्धता पर अंकुश ही लगाया गया था।

सवाल उठता है कि अब कोरोना महामारी से निपटने के राष्ट्रीय अभियान में तीसरे चरण की पूर्णबंदी में प्राथमिकताओं का निर्धारण करते हुए इस अंकुश को हटाने की आवश्यकता क्यों अनुभव की गई, जबकि पिछले चरणों में नहीं अनुभव की गई थी? अभी पूर्णबंदी में जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की सर्वसुलभता के लिए जरूरी दुकानें भी पूरी तरह से खुलने की व्यवस्था नहीं हो पाई है। नाइयों के हजामत बनाने जैसे व्यवसाय पर भी, जो उनकी जीविका का मुख्य स्रोत माना जाता है, अंकुश लगा हुआ है। ऐसे में यह कैसे कहा जा सकता है कि मध्य वर्ग की शराब की लत या आवश्कता ही शराब की दुकानें और ठेके खोलने के निर्णय के कारण बने? वास्तविकता तो यह है कि सरकारें शराब के ठेकों से होने वाले अपरिमित राजस्व लाभ के नुकसान को और लंबा नहीं खींचना चाहतीं, वरन उसकी उगाही कर लाभ उठाना चाहती थीं।

आंकड़े गवाह हैं कि पूर्णबंदी के दौरान सरकारों की राजस्व आय बुरी तरह घट गई है और उनके पास इसे बढ़ाने का महज यही विकल्प है कि वे शराब के ठेके खोलें या पेट्रोलियम पदार्थों पर कर बढ़ाएं। इसलिए पूर्वोत्तर के एक राज्य ने दुनिया भर में पेट्रोलियम पदार्थों के दाम गिरने के दौर में भी उन पर पांच से साच रुपए ज्यादा कर का प्रावधान किया और कच्चे तेल के बाजार के अनुसार उपभोक्ताओं के लिए पेट्रोलियम मूल्य निर्धारण का अनुपालन बंद कर दिया गया।

निष्कर्ष स्पष्टतः यही है कि शराब मानव जीवन और समाज में कैसी भी लाभदायक या नुकसानदेह भूमिका निभा रही हो, सरकार द्वारा पूर्णबंदी में उसके ठेके खोलने का कदम राजस्व आय के सहायक के रूप में उसका उपयोग करने और पूर्णबंदी के आर्थिक प्रभावों को थोड़ा कम करने के लिए उठाया गया है। इसके लिए यह भी ध्यान नहीं रखा गया कि इसके लतियों से मास्क और सुरक्षित दूरी के अनिवार्य प्रतिबंधों का पालन कैसे कराया जाएगा। इसी कारण दिल्ली में कई जगहों पर सुरक्षित दूरी के उल्लंघन के चलते ठेकों को खुलते ही बंद कर देना पड़ा।

बेमौसम बारिश

अन्नदाता पर कुदरत की मार!

डॉ. श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

पहले से ही कोरोना महामारी के चलते खेती कार्यो और मवेशियों के चारे के लिए परेशान हो रहे किसान की बेमौसम बारिश ने परेशानी बढ़ा दी है। इस बारिश ने गर्मी से तो राहत दी लेकिन खेतो से गेहू की तैयार फसल कटकर घर न आ पाने के कारण किसानों को चिंता बढ़ गई है। किसानों की रबी की फसलें खेत में पक कर तैयार हैं और कई किसानों की फसलें कट कर थ्रेसिंग के लिए भी तैयार हैं। कुछ ने समय रहते गेहूं की फसल काटकर थ्रेशिंग भी कर ली है। लेकिन अधिकांश किसान अभी तक अपनी फसलो को घर ला भी नही पाए कि मौसम की बेरुखी और बेमौसम बरसात से किसान की नींद उड़ा दी हैं।

किसानों का मानना है कि अगर दो दिन लगातार बारिश हो गई, तो पक कर तैयार हुई फसलें काफी हद तक खराब हो जाएगी। इस बेमौसम बरसात से जहां खेतों में तैयार खड़ी हुई फसलों को नुकसान है, वहीं दूसरी ओर खेतों में थ्रेसिंग के लिए कटी पड़ी फसलें के भी खराब होने की स्तिथि पैदा हो गई है। मौसम की बेरुखी का असर जहां एक ओर किसानों पर हो रहा है, तो वहीं दूसरी ओर बाजारों में बिकने वाले गेहूं के खराब हो जाने से गेहूं उत्पाद में आई कमी के कारण उसके दामों में भी बढ़ोतरी हो सकती है। इससे आम आदमी की जेब पर खासा असर पड़ेगा क्योंकि सीमित आय वाले मध्यमवर्गीय लोगों का घरेलू बजट खराब करेगा। किसान मौसम की बेरुखी का खामियाजा भुगतते रहे हैं। कभी ओलावृष्टि तो कभी बारिश से किसानों की फसलो को नुकसान होता है। किसान अशोक कुमार का कहना है कि पिछले वर्ष भी मौसम की बेरुखी से फसलें प्रभावित हो गई थीं और इस बार भी मौसम किसानों पर मेहरबान दिखाई नहीं दे रहा है। अगर हालत यही रही तो हमारी फसलों को भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है, जिससे आने वाले समय में किसान परिवारो पर रोटी रोजी का संकट पैदा हो जायेगा। कह सकते है कि मौजूदा समय किसानों के लिए कठिन परिस्थिति का है। किसानों की फसलें खेतों में पक कर तैयार खड़ी हैं लेकिन उनकी कटाई और थ्रेशिंग में सोशल डिस्टेंसिंग भी बड़ी अड़चन का कारण बन रही है। कोरोना वायरस महामारी बीमारी से बचने के लिए सरकार के निदेशों के अनुरूप किसान सोशल डिस्टेंशन का पालन करते हुए अपनी फसलों को मजदूरों से कटवा रहे हैं। वह कटाई के लिए मजदूरों के बीच में लगभग 2 से 4 मीटर का फासला भी रखते हैं । कुछ किसानों ने मजदूरों की मदद से फसल को कटवा कर उसे शोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए थ्रेसर के माध्यम से अपनी उपज को निकालने की सारी तैयारी कर ली थी लेकिन मौसम ने व्यवधान पैदा कर दिया। हालांकि, किसानों की मानें तो सोशल डिस्टेंसिंग के कारण खेती किसानी के काम में काफी देरी हुई है। पिछले चार महीनों से फसल को उगाने में जुटे किसानों की मेहनत एक झटके में तबाह हो जाने से किसानों में निराशा व्याप्त है। बारिश ही नहीं ओलावृष्टि ने भी किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया है। क्योंकि जब फसल को काटने का समय निकट आया तो ओलावृष्टि व बारिश की वजह से खड़ी फसल तबाह हो गई। खेतों में पानी भर गया। कुछ किसानों ने तो फसल काट भी ली थी लेकिन अचानक हुई बारिश ने किसानों को संभलने का मौका तक नहीं दिया।किसानों का कहना है कि जिन खेतों में फसले काटी जा चुकी है, वहां पड़े गेहूं के गट्ठर बारिश की वजह से खराब हो जाएंगे। ऐसे में पकी हुई फसल खुद-ब-खुद खराब हो जाएगी और वह हमारे कुछ काम नहीं आएगी। जिसका मतलब साफ है कि किसानों के मौजूदा समय किसी संकट से कम नहीं है। कई गांव के किसानों ने बताया कि गेहूं की फसल टूट कर खेत में बिछ गई है, जिससे बालियों के दाने झड़ कर मिट्टी में मिल गए हैं. इससे उन्हें फसल काटने में काफी परेशानी हो रही है. खेतीहर मजदूरों ने फसल कटाई की मजदूरी भी बढ़ा दी है. क्योंकि गिरी हुई फसल को काटना आसान नहीं होता है. अन्नदाता किसान का कुदरत कड़ा इम्तिहान ले रही है।खेती के लिए लिया बैंक का कर्ज, बच्चों की पढ़ाई का खर्च,बेटी की शादी का सपना सब कुछ खेती पर ही निर्भर है, लेकिन कुदरत ने किसान को हर मोर्चे पर निराश करने का काम किया है। बारिश ने किसान के खेत को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को चोटिल करने का काम किया।जिससे संभलना बहुत कठिन है। कुदरती त्रासदी ने किसानों का चैन छीन लिया है। बैंक का कर्ज कैसे भरा जाएगा, बेटों बेटी की पढ़ाई किस प्रकार होगी, बेटी के हाथ कैसे पीले होंगे, किसानों को कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है, ले-देकर सबकुछ रबी की फसल पर भरोसा किया था,जो टूट चुका है।मौसम की इस मार से उत्तराखंड में करीब दो सौ करोड़ रुपये की उपज बर्बाद होने का अनुमान है। मौसम की मार झेलकर टूट चुके अन्नदाताओं ने खून-पसीना बहाकर गेंहू समेत रबी की अन्य फसलें किसी तरह तैयार की थी। खेतों में लहलहा रही फसलों में दाने भी अच्छे पडे हुए थे। इसी बीच मौसम की मार पड़नी शुरू हो गई। मार्च महीना शुरू होते ही मौसम डरावना होने लगा। अभी 2 दिन पहले ही बेमौसम बारिश और तेज हवाओं के कारण गेंहू समेत ज्यादातर फसलें गिर गई थी। अब फिर हुई बारिश के कारण फसल गिरने व भीग जाने से करीब 30-40 प्रतिशत तक फसलों का नुकसान हुआ है। इस बर्बादी को देख किसानों के आंसू थम नहीं नही रहे है। गेहूं की जो फसल काटी नही जा सकी वह गिरकर पूरी तरह से बर्बाद हो गई है। इससे बाली में पड़े दाने कमजोर हो जाएंगे। मौसम की इस मार से अब किसानों का उबरना मुश्किल है। बारिश के कारण खेतों में खड़ी गेहूं की फसल जलमग्न हो गई है। वहीं सब्जी की फसल को भी भारी बारिश के कारण काफी नुकसान पहुंचा है। तराई के क्षेत्रों में जहां गेहूं और सरसों की फसल बारिश के कारण बर्बाद हुई है, वहीं पहाड़ पर सब्जी की फसल को भी खासा नुकसान पहुंचा है। कोरोना वायरस के कारण जारी लॉकडाउन से लोगों को खासा नुकसान हुआ है। एक महीने से छोटे से लेकर बड़ा कारोबार तक सबकुछ ठप पड़ा है। संकट की इस घड़ी में किसानों को उम्मीद थी कि फसल की पैदावार अच्छी हो जाए तो काफी कुछ सहेज लिया जाएगा। लेकिन मौसम ने उनके अरमानों पर पानी फेर दिया है। बहुत सारे किसानों की फसल कटकर खेत में पड़ी है, तो बहुतों की खेत में खड़ी है। बेमौसम बारिश के कारण इसे काफी नुकसान पहुंचा है। इस बार पैदावार पर असर पड़ना लाजमी है।

ज्ञान गंगा

भय को निकालें

जब प्रियता का संवेदन होता है तो अप्रियता का संवेदन भी होगा। हमारे सारे तनाव इस परिधि में हो रहे हैं। प्रियता का संवेदन हो, प्रिय मिले, प्रिय को वियोग न हो और अप्रियता का योग न हो। बस, सारी तनाव की यह सीमा है। इसी सीमा में सारे तनाव प्रकट हो रहे हैं। पर मूल में जो छिपा हुआ कारण कार्य कर रहा है, वह मात्र एक ही है- प्रियता का संवेदन, अप्रियता का संवेदन। अब यह संवेदन है तो भय भी पैदा होगा। एक छोटी सी कहनी है। एक आदमी बहुत डरता था। वह समझदार आदमी के पास गया जो मंत्र को जानता था। उसके पास जाकर बोला, 'मुझे डर बहुत लगता है। उसने ताबीज बना दिया और कहा, इसको बांध लो। तुम्हारा डर समाप्त हो जाएगा। ताबीज बांध लिया। डर लगना कम हो गया। पर मंत्र जानने वाला व्यक्ति कुछ दिन बाद ही आया और पूछा- भाई! अब डर तो नहीं लगता? उसने कहा, जो काल्पनिक था, वह तो नहीं लगता किन्तु एक डर और पैदा हो गया। निरन्तर मन में भय बना रहता है कि कहीं ताबीज गुम न हो जाए। एक भय तो समाप्त हुआ, दूसरा भय और आ गया। जब यह दृष्टि मूल में बनी रहती है कि प्रिय का वियोग न हो जाए, अप्रिय का योग न हो जाए, तब भय अनिवार्य है। उस मूल कारण से तनाव पैदा होता है। जब प्रिय संवेदन की भावना है, उसका तनाव भी पैदा होता है। हमारे जीवन के संचालन के केन्द्र में जो तत्व है, वह है लोभ। मनोविज्ञान के अनुसार हर व्यक्ति में कुछ मौलिक मनोवृत्तियां होती हैं। जीने की इच्छा भी इसी में एक है।

सच और झूठ

मित्रो ! सच और झूठ का,फर्क समझिये खूब।
झूठ कटीला बृक्ष है,सच है पावन दूब।
सच्चाई के मार्ग पर,जो चलते श्रीमान।
उनको मिलता है सदा,आदर और सम्मान।
सत्य पुंज है तेज का,करता सदा प्रकाश।
झूठ तिमिर अज्ञान है,करता सदा विनाश।
सच्चाई के साथ में,संकट और संघर्ष।
लेकिन मत घबराइये,अंत मिलेगा हर्ष।
झूठ कभी टिकता नहीं,उसके हल्के पाँव।
सत्य सदा होता सुखद,उसकी शीतल छाँव।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उ.मा. विद्यालय,लहार

शोकसंदेश

अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पडरहा है कि स्व लक्ष्मीनारायण अग्रबाल की धर्म पत्नी बिमला देबी अग्रबाल का निधन दि.05/05/20 को होगया है अत-दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये उनकी उठावनी 08/05/20 दिन शुक्रबार समय 4 से5 बजे के बीच महाराजा अग्रसेन स्कूल मे होगी...

शोकाकुल परिबार...धनश्याम दास अग्रबाल
भतीजे...राजेश अग्रबाल,पंकज अग्रबाल
नातीगण आशीष,(सिम्पी)अन्सुल (डिम्पी)हर्ष
पंतिगण...आर्यन, हर्ष
फर्म...प्रदीप ज्वेलर्श सदर बाजार गंज अम्बाह...
जीडी इन्टर प्राइजेज इन्दौर...

बुद्ध पूर्णिमा विशेषः प्रत्येक प्राणी के प्रति दयाभाव रखते थे बुद्ध

योगेश कुमार गोयल

563 ईसापूर्व वैशाख मास की पूर्णिमा को लुम्बनी वन में शाल के दो वृक्षों के बीच एक राजकुमार ने उस समय जन्म लिया, जब उनकी मां कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी अपने पीहर देवदह जा रही थी और रास्ते में ही उन्हें प्रसव पीड़ा शुरू हो गई थी। इस राजकुमार का नाम रखा गया सिद्धार्थ, जो आगे चलकर महात्मा बुद्ध के नाम से विख्यात हुए।

महात्मा बुद्ध का जीवन दर्शन और उनके विचार आज ढ़ाई हजार से अधिक वर्षों के बेहद लंबे अंतराल बाद भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उनके प्रेरणादायक जीवन दर्शन का जनजीवन पर अमिट प्रभाव रहा है। हिन्दू धर्म में जो अमूल्य स्थान चार वेदों का है, वही स्थान बौद्ध धर्म में पिटकों का है। महात्मा बुद्ध स्वयं अपने हाथ से कुछ नहीं लिखते थे बल्कि उनके शिष्यों ने ही उनके उपदेशों को कंठस्थ कर बाद में उन्हें लिखा और लिखकर उन उपदेशों को वे पेटियों में रखते जाते थे, इसीलिए इनका नाम पिटक पड़ा, जो तीन प्रकार के हैं:- विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। महात्मा बुद्ध के जीवनकाल की अनेक घटनाएं ऐसी हैं, जिनसे उनके मन में समस्त प्राणीजगत के प्रति निहित कल्याण की भावना तथा प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव का साक्षात्कार होता है। उनके हृदय में बाल्यकाल से ही चराचर जगत में विद्यमान प्रत्येक प्राणी में प्रति करूणा कूट-कूटकर भरी थी। मनुष्य हो या कोई जीव-जंतु, किसी का भी दुख उनसे देखा नहीं जाता था। एक बार की बात है, जंगल में भ्रमण करते समय उन्हें किसी शिकारी के तीर से घायल एक हंस मिला। उन्होंने उसके शरीर से तीर निकालकर उसे थोड़ा पानी पिलाया। तभी उनका चचेरा भाई देवदत्त वहां आ पहुंचा और कहा कि यह मेरा शिकार है, इसे मुझे सौंप दो। इस पर राजकुमार सिद्धार्थ ने कहा कि इसे मैंने बचाया है जबकि तुम तो इसकी हत्या कर रहे थे, इसलिए तुम्हीं बताओ कि इस पर मारने वाले का अधिकार होना चाहिए या बचाने वाले का। देवदत्त ने सिद्धार्थ की शिकायत उनके पिता राजा शुद्धोधन से की। शुद्धोधन ने सिद्धार्थ से कहा कि तीर तो देवदत्त ने ही चलाया था, इसलिए तुम यह हंस उसे क्यों नहीं दे देते? इस पर सिद्धार्थ ने तर्क दिया, पिताजी! इस निरीह हंस ने भला देवदत्त का क्या बिगाड़ा था? उसे आसमान में स्वच्छंद उड़ान भरते इस बेकसूर हंस पर तीर चलाने का क्या अधिकार है? उसने इस हंस पर तीर चलाकर इसे घायल किया ही क्यों? मुझसे इसका दुख देखा नहीं गया और मैंने तीर निकालकर इसके प्राण बचाए हैं, इसलिए इस हंस पर मेरा ही अधिकार होना चाहिए। राजा शुद्धोधन सिद्धार्थ के इस तर्क से सहमत होते हुए बोले, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो सिद्धार्थ। मारने वाले से बचाने वाला ही बड़ा होता है, इसलिए इस हंस पर तुम्हारा ही अधिकार है। महात्मा बुद्ध जब उपदेश देते जगह-जगह घूमते तो कुछ लोग उनका खूब आदर-सत्कार करते तो कुछ उन्हें बहुत भला-बुरा बोलकर खूब खरी-खोटी भी सुनाते तो कुछ दूर से ही उन्हें अपमानित कर दुत्कार कर भगा देते लेकिन महात्मा बुद्ध सदैव शांतचित्त रहते। एक बार वे भिक्षाटन के लिए शहर में निकले और उच्च जाति के एक व्यक्ति के घर के समीप पहुंचे ही थे कि उस व्यक्ति ने उन पर जोर-जोर से चिल्लाना तथा गालियां देना शुरू कर दिया और कहा कि नीच, तुम वहीं ठहरो, मेरे घर के पास भी मत आओ। बुद्ध ने उससे पूछा, भाई, यह तो बताओ कि नीच आखिर होता कौन है और कौन-कौनसी बातें किसी व्यक्ति को नीच बताती हैं? उस व्यक्ति ने जवाब दिया, मैं नहीं जानता। मुझे तो तुमसे ज्यादा नीच इस दुनिया में और कोई नजर नहीं आता। इस पर महात्मा बुद्ध ने बड़े प्यार भाव से उस व्यक्ति को समझाते हुए कहा, जो व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से ईर्ष्या करता है, उससे वैर भाव रखता है, किसी पर बेवजह क्रोध करता है, निरीह प्राणियों पर अत्याचार या उनकी हत्या करता है, वही व्यक्ति नीच होता है। जब कोई किसी पर चिल्लाता है या उसे अपशब्द कहता है अथवा उसे नीच कहता है तो ऐसा करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में नीचता पर उतारू होता है क्योंकि असभ्य व्यवहार ही नीचता का प्रतीक है। जो व्यक्ति किसी का कुछ लेकर उसे वापस नहीं लौटाता, ऋण लेकर लौटाते समय झगड़ा या बेईमानी करता है, राह चलते लोगों के साथ मारपीट कर लूटपाट करता है, जो माता-पिता या बड़ों का आदर-सम्मान नहीं करता और समर्थ होते हुए भी माता-पिता की सेवा नहीं करता बल्कि उनका अपमान करता है, वही व्यक्ति नीच होता है। जाति या धर्म निम्न या उच्च नहीं होते और न ही जन्म से कोई व्यक्ति उच्च या निम्न होता है बल्कि अपने विचारों, कर्म तथा स्वभाव से ही व्यक्ति निम्न या उच्च बनता है। कुलीनता के नाम पर दूसरों को अपमानित करने का प्रयास ही नीचता है। धर्म-अध्यात्म के नाम पर आत्मशुद्धि के बजाय कर्मकांडों या प्रतीकों को महत्व देकर खुद को दूसरों से श्रेष्ठ साबित करके दिखाने का दंभ ही नीचता है। महात्मा बुद्ध के इन तर्कों से प्रभावित हो वह व्यक्ति उनके चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। बुद्ध ने उसे उठाकर गले से लगाया और उसे सृष्टि के हर प्राणी के प्रति मन में दयाभाव रखने तथा हर व्यक्ति का सम्मान करने का मूलमंत्र देकर वे आगे निकल पड़े।

कोरोना महामारी का असर मिट्टी के मटकों पर, गर्मियों में कुम्भार के फ्रीज लॉक?

गर्मी में ग्राहकी न होने के कारण मटके व्यवसायी परेशान - ख्यालेन्द्र प्रजापति

कुम्भारों (प्रजापति) के तैयार बर्तनों व गमी के राजा ठंडा मटका से जो रोजगार चार महिनों में होता है, उसकी भी कोरोना महामारी लोकडाउन के कारण तैयार मटको को कोई भी लेने नहीं आ रहा है, जबकि गर्मी प्रारम्भ होते ही गरीब के घर का फ्रीज मटका ही होता है जो कोरोना महामारी लोकडाउन के कारण लॉक हो गया है। कुम्भारों के बर्तनों की माह अप्रैल से लेकर जून माह तक मटको की ब्रिकी होती है जिससे अपने परिवार का भरण पोषण कर लेता है क्योंकि इन मिट्टी के बर्तनों को बनाने में उसका पूरा परिवार लगा होता है तब जाकर खाने की व्यवस्था होती है। अभी तक कुम्भारों के बर्तनों की ब्रिकी अच्छी खासी हो जाती थी लेकिन सालभर से मटको की ब्रिकी का इंतजार कर रहे कुम्हारों के व्यवसाय पर कोरोना वायरस ने ग्रहण लगा दिया है। हालत यह है कि मट्का बनाने के कारोबार से जुड़े परिवार दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष कर रहे है।

राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ मध्यप्रदेश के महासचिव गणेश प्रजापति जी (ग्वालियर) ने बताया कि मटका बनाने में सम्पूर्ण भारत में मध्यप्रदेश का नाम है और सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के सभी ग्रामीण व शहरी इलाकों में आज भी मटके बनाने का व्यवसाय किया जाता है, जो सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में इस लोकडाउन के चलते मध्यप्रदेश के कई शहरों में व सभी ग्रामीण क्षेत्रों सहित वन क्षेत्र में भी कुम्भार समाज के सभी व्यवसायी मटके नहीं बिकने के कारण परेशान है। वर्तमान आने वाले समय में लोकडाउन खुलने के बाद कुम्भार अपने परिवार को कैसे पालेगा और बच्चों को कैसे पढायेगा। प्रदेशाध्यक्ष ख्यालेन्द्र प्रजापति जी ने कहा कि मटका बनाने के बाद ग्रामीण से शहरों में भी रोड के

पास हार साल मटके बेचते नजर आते थे अबकी बार कोरोना वायरस के कारण कोई कुम्भार व्यापारी भी शहरों में नहीं आ सकें। मिट्टी के व्यवसाय से जुडे लोगों को सरकार से अब तक किसी भी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता नहीं मिली है बेचारा गरीब कुम्भार अपने परिवार का भरण पोषण कैसे करें । क्योंकि गर्मी में सबसे ज्यादा बर्तन की ब्रिकी होती थी जिससे बनाने वाले व बेचने वाले जैसे तैसे अपने परिवार का भरण-पोषण करके अपने परिवार को पालता था। इस कोरोना महामारी के कारण जो लोकडाउन हुआ है उससे इस समय जो शादी होने वाले भी सभी रूक गई इसलिए ये समाज अब बिल्कुल परेशान और हताश हो गया। राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ मध्यप्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष ख्यालेन्द्र प्रजापति जी ने मध्यप्रदेश की सरकार के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी को पत्र लिखकर कुम्भार (प्रजापति) समाज के मटका व्यवसाय की समस्या के बारे में जल्द ही कुम्भार समाज की समस्या के समाधान के लिए कुम्भार (प्रजापति) समाज को आर्थिक सहायता दिलवाने हेतु निवेदन किया है। इस समस्या के कारण लाखों परिवारों पर रोजगार का संकट मंडरा रहा है साल भर इसी सीजन में कुम्भार का व्यवसाय अच्छी तरीके चलता था उनको अपनी मेहनत का फल इसी समय मिलता था लेकिन लोकडाउन के कारण जीवन अन्धकार में नजर आ रहा है। कुम्भार (प्रजापति) समाज के मटका व्यवसाय से जुड़े परिवारों की उक्त समस्या हेतु सरकार को लॉक डाउन में नियमों के अनुसार सोशल डिसटेन्स का पालन करते हुए इनको मटके की ब्रिकी के लिए घर-घर फेरी लगाकर करने की परमिशन दी जानी चाहिए।

मध्यप्रदेश में शुरू हुई संकल्प योजना, बुजुर्गों को मिलेंगी सुविधाएं

उमरिया। कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए सरकारों ने कुछ सख्त फैसले लिए हैं, उनमें से एक लॉकडाउन भी है। लॉकडाउन से अकेले रहने वाले बुजुर्गों को परेशानी न हो इसके लिए मध्यप्रदेश के उमरिया जिले की पुलिस ने संकल्प योजना शुरू की है। इसका मकसद बुजुर्गों को घर तक सुविधाएं मुहैया कराना है। विभिन्न इलाकों में बड़ी संख्या में ऐसे बुजुर्ग अकेले या दंपत्ति निवासरत है जिनके बच्चे दूसरे शहरों में नौकरी करते हैं और वे अकेले रहने को मजबूर हैं। वैसे भी बुजुर्गों के लिए अपनी सुविधाएं जुटाना मुश्किल होता है और महामारी के बीच यह और भी कठिन हो गया है। लॉकडाउन के कारण उन्हें कई तरह की समस्याओं से गुजरना पड़ रहा है लिहाजा बुजुर्ग सुरक्षित रहें समस्याओं से न जूझना पड़े, इसके साथ ही उन्हें सुविधाएं उनके दरवाजे पर मिले इसके लिए उमरिया पुलिस ने संकल्प योजना की शुरुआत की है। पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा ने समाचार एजेंसी आईएएनएस को बताया, जिले में जितने भी बुजुर्ग हैं उनको सुविधा देने के मकसद से यह योजना शुरू की गई है। 60 वर्ष की आयु से अधिक के बुजुर्गों के लिए यह योजना शुरू की गई है। इस योजना के जरिए इन बुजुर्गों के घर तक दवाएं, सब्जी, दूध, आवश्यक सामान टेलीफोन, टीवी रिचार्ज कराना, ऑनलाइन आवेदन करना आदि जैसी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है। बताया गया है कि 450 पुलिसकर्मियों को बुजुर्गों की देखरेख के लिए तैनात किया गया है। इन पुलिस जवानों पर बुजुर्गों की जरूरतों को पूरा करने की जवाबदारी सौंपी गई है।

मिले खून मेरा तुम्हारा तो खून बने हमारा : आकाश राहुल गुप्ता

पुष्पांजली टुडे

सतना। हमारे जीडीओ संस्था के युवा समाजसेवी आकाश गुप्ता नवस्ता के द्वारा 400वा रक्तदान कर जरूरतमन्दो की मदद कर के इस मुहिम को बढ़ते हुए आज राहुल गुप्ता राज जो रायपुर के रहने वाले है। इन्होंने अपने जीवन का दूसरा रक्तदान कर के मरीज आशा गुप्ता की जान बचाई आशा गुप्ता जी का ऑपरेशन हुआ

जिससे उनको ए पॉजिटिव ब्लड की आवश्यकता पड़ी सतना जिला अस्पताल में जिससे शुभम गुप्ता और अभिषेक लकी गुप्ता ने कॉल किया आकाश गुप्ता को तो आकाश ने अपने जीडीओ सदस्य राज गुप्ता से बात की और पूरी बात बताये की आशा गुप्ता जो टुकुरिया टोला की रहने वाली है उनका ऑपरेशन हो रहा है उनको ए पॉजिटिव ब्लड की सख्त आवश्यकता है आकाश ने बताया कि जबकि राज गुप्ता ने 2 महीना पहले ही ब्लड अपना एक जरूरतमंद मरीज को अपना रक्तदान देकर जीवन बचाया था लेकिन आज उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर ऐसी संकट घड़ी ऐसी महामारी करोना की बीमारी लॉकडाउन में आज राज अपना रक्तदान कर एक महिला की जान बचाई।राहुल ने बताया कि अगर आपको लगता है कि आपके पास दान देने के लिए कुछ भी नहीं है। तो जरा सोचिये आपके पास सबसे मूल्यवान संसाधन है जिसे दान करने से किसी की भी जिंदगी बच सकती है, जी हां वह है रक्तदान।और आकाश गुप्ता ने बताया रक्तदान जरूरी है भाई नहीं आती इससे कोई कमजोरी। राज आपको भगवान हमेशा खुश रखे। मौजूद युवा साथी मनीष गुप्ता, विवेक गुप्ता,अंकित गुप्ता (यन.एस.यू.आई),उपस्थित रहे।

लॉकडाउन में निकाह करने को एक दूल्हा बना ड्राइवर तो दूसरा मरीज, जानें फिर क्या हुआ

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुरैना शहर के दो दूल्हों ने निकाह के लिए जाने को फर्जी तरीके से पास हासिल करना बहुत महंगा पड़ा। इन दो दूल्होंने इमरजेंसी पास हासिल करने के लिए मरीज और ड्राइवर बनकर अधिकारियों से मदद मांगी। पास हासिल करने के बाद दोनों दूल्हे अपने निकाह के लिए निजी वाहन से यूपी के आगरा के लिए रवाना हो गए। जब दोनों का राज खुला तो पुलिस ने दोनों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। कोतवाली पुलिस थाने के सब-इंस्पेक्टर रामवीर सेंथिया ने बताया कि इस मामले में वाहन मालिक और उसकी पत्नी सहित तीन अन्य पर केस दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि दूल्हे इमरान कुरैशी और शाहरुख ने ड्राइवर एवं मरीज होने का नाटक किया और मेडिकल पास हासिल किया। जिस पर उन्होंने 30 अप्रैल को आगरा का सफर किया। वे वहां अपनी शादी के लिए गए थे और अपनी-अपनी पत्नियों के साथ लौटे। बताया गया कि वाहन का मालिक आनंद राठौड़ उसी पास से आगरा गया और अपनी पत्नी को लेकर आया, जो कोरोना पॉजिटिव पाई गई और यहां जिला अस्पताल में भर्ती है। इस मामले में दो अन्य लोगों पर भी केस दर्ज है, जो इस धोखाधड़ी में शामिल थे।

दबोह पुलिस ने किया 307 का आरोपी गिरफ्तार

दबोह। दबोह पुलिस ने लगभग एक महीने से फरार चल रहे आरोपी रघुवीर पुत्र छोटेलाल उम्र 50 साल निवासी पन्नापुरा को किया गिरफ्तार जिस पर भिंड पुलिस अधीक्षक के द्वारा 5000 रुपये का इनाम घोषित किया गया था पुलिस द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार दबोह थाना अंतर्गत आने वाले ग्राम पन्नापुरा निवासी राजकुमार राजावत पर पुरानी रंजिश के चलते कुछ लोगो ने जानलेवा हमला किया था जिसके चलते फरयादी राजकुमार राजावत ने पाँच लोगो के खिलाफ दबोह थाना पहुँच कर 09/03/2020 को नामदर्ज रिपोर्ट दर्ज करायी थी तब से फरार चल रहे आरोपी जनक सिंह दोहरे,साई बाबा उर्फ संदीप, कुलदीप, बुद्धप्रकाश, रघुवीर सहित उक्त आरोपियों की तलाश पुलिस के द्वारा प्रारंभ कर दिया था तब ही आज अचानक मुखबिर के द्वारा दबोह पुलिस को सूचना प्राप्त हुयी की उक्त आरोपियों में से एक आरोपी अपने मकान के पीछे छिपा हुआ है प्राप्त सूचना के अनुसार दबोह पुलिस ने मौके पर पहुँच कर घेराबंदी कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है इस मुहिम में थानाप्रभारी विजय सिंह तोमर,उपनिरीक्षक बी.एस यादव, प्रधान आर.बलबीर, आरक्षक कमलेश, अभिषेक, गजेंद्र, दीपक, सिद्धांत, राजू की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

डीआईजी चम्बल जॉन राजेश हिगडकर के औचक निरीक्षण से सभी थाने अलर्ट अम्बाह डिबीजन थानों को बारीकी से किया चैक

केशब प्रशाद शर्मा ब्यूरो चीफ

अम्बाह / उप पुलिस महानिरीक्षक चम्बल जॉन राजेश हिगडकर व मुरैना एसपी डा.असित यादव के द्वारा अम्बाह डिबीजन के थाना पोरसा, नगरा, महुआ, का निरीक्षण किया गया। इस दौरान अम्बाह थाना परिसर का भ्रमण कर थाना कार्यालय, हवालात, मालखाना, कंप्यूटर कक्ष, बैरक आदि का निरीक्षण करते हुए परिसर को साफ व स्वच्छ रखने तथा कार्यालय के अभिलेखों के बेहतर व व्यवस्थित रखरखाव एवं उनको अद्यावधिक रखने हेतु निर्देशित किया गया साथ ही थाने पर दाखिल विभिन्न अभियोगों से संबंधित माल/व जप्ती शराब को बारीकी से चैक किया थाने पर आने वाले पीड़ित/शिकायतकर्ता की शत

प्रतिशत सुनवाई करते हुए प्रकरण की जांच कर आवश्यक विधिक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश भी कोरोना के प्रति सभी स्टॉप को साबधानी बरतने के निर्देश दिए और मुरैना एसपी डा.असित यादव की तारीफ करते हुए उन्होने कहॉ कि एसपी साहब की कसाबट से मुरैना की ब्यवस्था चुस्त दुरस्त देखने को मिली जो तारीफ काबिल है उनके अथक प्रयासो से मुरैना कोरोना पॉजिटिव मरीजो को निगेटिव कर जीरो पर कर दिया यह उन्ही के प्रयासो का परिणाम है।

और सभी थाना प्रभारियो को निर्देशित किया कि रात्रि कालीन पैट्रौलिग शहर व ग्रामीण तक जारी रहना चाहिये सभी थानो मे गस्त के दौरान यूनिफार्म मे रहै लूट फाइरिग चौरी जिसकी बीट मे हुई तो बीट प्रभारी के साथ थाना प्रभारी भी नपेगे...

अम्बाह एमएलडी स्कूल के पास बहुत बडा हादसा टला...

गिट्टी से भरा ओबरलोड ट्रक चालू लाइट के ऊपर पलटा आधे अम्बाह की लाइट बन्द दो टॉसंफर नीचे गिरे...

केशब प्रशाद शर्मा ब्यूरो चीफ

अम्बाह। यू कहा जाये तो आठ दिन से मौत का तांडव थम नही रहा है डैली आग व फॉसी से मौत लेहरी है परन्तु आज पोरसा चौराहे के पास एमएलडी स्कूल के पास रोड बनाने का काम चल रहा है जिस पर एक गिट्टी से भरा ट्रक कम्प्रेसर से उठाते समय अन्यंत्रण होकर चालू लाइट के टॉसफर के ठिये पर जा गिरा जिससे ठिया टूटने से बहुत बडी घटना होने से बची व लाइन ध्वस्त हो गई और दो मेन रोड के टॉसंफर नीचे गिर गये और आधे अम्बाह की लाइट बन्द होगई जैसे अम्बाह अस्पताल एसडीएम कार्यालय कॉर्ट पोस्ट आफिस आदि सभी की लाइट बन्द है अभी इंम्मफर खबर लिखे जाने तक हटा नही है बिजली अधिकारी मौके पर पहुच कर लाइट चालू करबाने की मशक्कत कर रहै है आठ ट्रॉसफरो की लाइट बन्द है करीबन बिजली बिभाग का आठ लाख का नुकसान हुआ है।

शासन के आदेश अनुसार ठेके हुए चालू उमड़ी भीड़

दतिया / सोशल डिस्टेंसिंग की उड़ी धज्जियां बिना मार्क्स पहने हुए ले रहे लोग शराब एक तरफ कोरोना वायरस से परेशान देश की जनता वहीं एक तरफ देखने को मिली लापरवाही सोशल डिस्टेंसिंग का किया उल्लंघन सूत्रों की मानें तो शासन प्रशासन द्वारा पूरे देश में लगा लॉक डाउन वही देखने को मिला दतिया में शराब ठेके के खुलने के बाद जो हुआ वह शर्मसार कर देने वाली अगर लोग सोशल डिस्टेंसिंग उलंघन करेंगे तो कैसे देश सुधरेगा और कैसे कोरोना से हम जीत सकेंगे एक तरफ शासन परेशान दूसरी तरफ पब्लिक तो नाम ही नहीं ले रही सुधारने का लोग रख रहे स्टॉप करके 5510 बोतल।

टीएचआर के तहत पोषण आहार में सत्तू वितरण किया गया

दतिया। वैश्विक महामारी कोरोना लॉकडाउन के दौरान बच्चों को पोषण आहार महैया होता रहे इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रदेश सरकार के निर्देशन पर जिला कार्यक्रम अधिकारी महेन्द्र सिंह अम्ब के मार्गदर्शन में टेक होम राशन के अंतर्गत सत्तू वितरण मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र वार्ड क्रमांक 34 पर वार्ड पार्षद धनीराम, मानसिह कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता रामजीशरण राय, अशोककुमार शाक्य, सरदार सिंह

गुर्जर, पर्यवेक्षक एवं बाल विकास विभाग महिला प्रतिमा पाठक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भानुमति शाक्य एवं आंगनबाड़ी केन्द्र -2 रजनी श्रीवास्तव एवं आशा कार्यकर्ता बबीता परिहार उपस्थित रहीं। उक्त दल द्वारा घर-घर जाकर सोशल डिस्टनसिंग के पालन के प्रति जागरूक किया गया साथ ही हितग्राहियों के हाथ सेनेटाइज किये गए। उक्त जानकारी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता भानुमति शाक्य ने दी।

सफलता की कहानी, (नोवेल कोरोना वायरस)

समूहों की महिलायें मास्क बनाकर कोरोना के संक्रमण को रोकने में दे रहीं हैं योगदान

ग्वालियर। स्व-सहायता समूह की महिला सदस्य सूती कपड़े के मास्क बनाकर कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने में सहायता समूहों से जुड़कर सवा चार सौ महिलायें मास्क का निर्माण कर घर पर ही रोजगार प्राप्त कर रही है। स्व-सहायता स्व-सहायता समूहों से जुडी महिलायें जो मास्क बना रही हैं, उनमें डबरा जनपद के ग्राम कल्याण समूह द्वारा 70 हजार मास्क संक्रमण को फैलने से रोकना है। जनता के बीच सकारात्मक संदेश देना है। महिलाओं ने बताया कि कोरोना महामारी के दौरान मास्क निर्माण से घर पर ही समूहों की महिला सदस्यों को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। इस कार्य से समूह की सदस्यों को 200 रूपए प्रतिदिन की आय भी हो रही है। सदस्यों ने बताया कि कोविड-19 के संक्रमण को रोकने में मास्क ही एक ऐसा सरल, सस्ता एवं सुलभ साधन है, जो 10 रूपए में कोई भी व्यक्ति खरीदकर उपयोग कर सकता है। निर्मित मास्क एक परत में तीन फोल्ड में सूती कपड़े का बना होता है। जिसे धोकर पुन- उपयोग किया जा सकता है। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कोरोना महामारी को रोकने में मास्क बनाने वाले समूहों की महिलाओं की सराहना की है। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री शिवम वर्मा ने बताया कि जिले में सभी विकासखण्डों में स्व-सहायता समूहों के माध्यम से मास्क बनाने का कार्य किया जा रहा है। जिले में बनाए गए 2 लाख मास्क में से 70 हजार मास्क अकेले डबरा जनपद के ग्राम कल्याणी समूह द्वारा निर्मित किए गए हैं।

अपना अहम योगदान दे रही हैं। इन मास्क के निर्माण से घर पर ही महिलाओं को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। मध्यप्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत ग्वालियर जिले के 22 गाँवों में स्व-समूहों द्वारा दो लाख से अधिक मास्क का निर्माण भी किया गया है, जो विभिन्न शासकीय कार्यालयों, संस्थाओं एवं मनरेगा में लगे मजदूरों द्वारा कोरोना के संक्रमण को रोकने में उपयोग किया जा रहा है। जिले में बनाये गए हैं। समूह की सदस्य रहीसा, सरोज, नीतू, अनीशा एवं मीना का कहना है कि मास्क निर्माण करने का उनका मुख्य मकसद आमजन को 10 रूपए में मास्क उपलब्ध कराकर कोविड-19 वायरस के

बिहार से मप्र के बच्चे लाने एवं नवोदय विद्यालय में पढ़ रहे

बिहार के बच्चों को वापस भेजने की व्यवस्था में बच्चों को लेकर बस रवाना

ग्वालियर। नवोदय विद्यालय पिछोर में बिहार के लगभग 24 बच्चे पढ़ रहे हैं। बिहार में भी मध्यप्रदेश के लगभग 24 बच्चे पढ़ रहे हैं। बच्चों के अभिभावकों द्वारा सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर से बिहार के बच्चों को बिहार भेजने एवं मध्यप्रदेश के बच्चों को मध्यप्रदेश में बुलाने का आग्रह किया था। सांसद श्री शेजवलकर द्वारा ग्वालियर कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह से व्यवस्था करने को लेकर चर्चा की।

कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह द्वारा नवोदय विद्यालय पिछोर में पढ़ने वाले बिहार के 24 बच्चों को बिहार भेजने तथा वहां से मध्यप्रदेश के बच्चों को वापस बुलाने के लिए बस की व्यवस्था की। यह बस आज प्रातः बिहार के बच्चों को लेकर बिहार के लिए रवाना हो गई तथा वहां से यह बस मध्यप्रदेश के बच्चों को लेकर वापस आएगी। ग्वालियर से बिहार के लिये रवाना की गई बस में बच्चों के साथ सुरक्षा हेतु सुरक्षा गार्ड के साथ-साथ भोजन, पानी की व्यवस्था भी की गई है।

ग्वालियर जिले में समर्थन मूल्य पर 76 हजार 616 मैट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन

118 क्विंटल चना एवं 211 क्विंटल सरसों की खरीदी

ग्वालियर। जिले में गेहूँ सबसे महत्वपूर्ण रबी फसल है। गत वर्ष 1.33 लाख मैट्रिक टन का उपार्जन किया गया था। इस वर्ष अच्छी पैदावार को देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा 1.50 लाख मैट्रिक टन गेहूँ खरीद का लक्ष्य रखा गया है। जिले में 21563 कृषकों द्वारा गेहूँ उपार्जन में देने हेतु पंजीयन कराया गया है। जिसकी खरीदी हेतु जिले में गत वर्ष 65 की तुलना में इस वर्ष 72 गेहूँ उपार्जन केन्द्र स्थापित हैं। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराते हुए जिले में अभी तक 9060 कृषकों से 76616 मैट्रिक टन गेहूँ उपार्जन किया जा चुका है। अभी जिले में 1977 कृषकों के खाते में गेहूँ खरीदी की राशि 26.97 करोड़ रूपए प्रदान की जा चुकी है। शेष भुगतान की प्रक्रिया लगातार जारी है। चना तथा सरसों की खरीदी जिले में 29 अप्रैल 2020 से 20 केन्द्रों पर लगातार की जा रही है। अभी तक कुल 72 कृषकों से 618 क्विंटल चना तथा 211 क्विंटल सरसों की खरीदी कृषकों से की जा चुकी है। कृषकों की मांग को देखते हुए चना एवं सरसों की जिले हेतु उत्पादकता क्रमशः 18 एवं 16 क्विंटल प्रति हैक्टेयर रखे जाने एवं किसान समर्थन मूल्य पर चना बेचने हेतु प्रतिदिन 15 कृषकों को एसएमएस भेजने का प्रस्ताव शासन को भेजा गया। शासन स्तर से किसानों की समस्याओं के त्वरित निराकरण हेतु किसानों का सच्चा साथी कमल सुविधा केन्द्र जिसका दूरभाष नम्बर 0755-2558823 है, जारी किया गया है। कृषक भाई अपनी कृषि संबंधी समस्याओं के निराकरण हेतु इसका उपयोग अवश्य करें।

रेरा प्राधिकरण ने कोरोना महामारी के मद्देनजर रियल एस्टेट सेक्टर को दी राहत

ग्वालियर। मध्यप्रदेश भू-संपदा विनियामक प्राधिकरण (रेरा) ने कोरोना महामारी के कारण रियल एस्टेट सेक्टर पर पड़े विपरीत प्रभाव को देखते हुए राहत देने का निर्णय लिया है। इसके मद्देनजर पंजीकृत परियोजनाओं को पंजीयन अवधि में गत 15 मार्च से 6 माह की छूट प्रदान की है। बिल्डर तथा ऐजेंट को रिटर्न जमा करने की तारीख भी 30 जून 2020 तक बढाई गई है। प्राधिकरण के इस निर्णय से प्रदेश की पंजीकृत करीब 3000 परियोजनाओं को लाभ मिलेगा। प्राधिकरण का यह निर्णय रियल एस्टेट सेक्टर को पुनर्जीवित करने में भी सहायक होगा। उल्लेखनीय है कि वित्त मंत्रालय भारत सरकार द्वारा गत 19 फरवरी को कोरोना त्रासदी को फोर्स मेज्योर की श्रेणी मे रखा गया है। साथ ही उद्योगों को इसके प्रभाव से निपटने के लिये अनेक राहत एवं छूट प्रदान की गई है। रिर्जव बैंक ने भी सभी बैंको को उनके द्वारा प्रदाय निश्चित अवधि के ऋण तथा मासिक ईएमआई के भुगतान पर भी तीन महीने की मोहलत दी है। आवासीय एवं नगरीय विकास मंत्रालय भारत सरकार के अधीन गठित केन्द्रीय सलाहकार समिति ने भी कोरोना त्रासदी के मद्देनजर प्रोजेक्ट के पंजीकृत को 6 माह का विस्तार देने की अनुंशसा की है। इस संबंध में सम्प्रवर्तकों की अनेक संस्थाओं ने भी प्राधिकरण को राहत देने के लिए अभ्यावेदन दिये थे। प्राधिकरण ने यह निर्णय लिया है कि जिन परियोजनाओं की पूर्णता गत 15 मार्च और उसके बाद होनी थी उनका पंजीयन, समाप्ति दिनांक से 6 माह के लिए बढ़ाया जायें। रेरा में जिन परियोजनाओं के पंजीयन में विस्तार संबंधी आवेदन विचारधीन हैं, उनकी पंजीयन अवधि में 6 माह का अतिरिक्त विस्तार निःशुल्क दिया जाये। साथ ही जिनके पंजीयन गत 15 मार्च के पहले समाप्त हो गये थे एवं जिनके द्वारा अभी तक विस्तार के लिये प्राधिकरण में आवेदन नहीं किया गया है, ऐसी परियोजनाओं द्वारा विस्तार चाहे जाने पर उनकी अंतिम वैधता अवधि में भी 6 माह का विस्तार अतिरिक्त रूप से प्रदान किया जाये। सम्प्रवर्तक एवं ऐजेंट को जो वैधानिक आवश्यक जानकारियाँ 31 मार्च या उसके बाद प्रस्तुत करनी थी, उनकी अंतिम तिथि भी 30 जून 2020 तक बढ़ा दी गई है। विस्तार संबंधी आदेश उन सभी क्रेता-विक्रेता अनुबंधों पर भी लागू होगा जो गत 15 मार्च के पहले संपादित हुए हैं, पर जिनकी पूर्णता अवधि 15 मार्च 2020 के बाद नियत है। ऐसे अनुबंधों के लिये सहमत निर्माण अवधि में 6 माह का विस्तार मान्य किया जायेगा।

डॉ. सिकरवार ने किया कर्म योद्धाओं का सम्मान

ग्वालियर। भारतीय जनता पार्टी के वरिश्ठ नेता एवं जन उत्थान न्यास अध्यक्ष डॉ. सतीष सिंह सिकरवार ने आज कोरोना के कर्म योद्धाओं का पुश्पहार पहनाकर एवं वस्त्र भेंट कर सम्मान किया। डॉ. सिकरवार ने कर्म योद्धाओं को संबोधित करते हुये कहा कि आप सभी ने मेरे साथ मिलकर जो लगातार 28 दिन तक बिना रूके घर-घर जाकर खाद्यय् सामग्री का वितरण किया है, वह सरहानीय कार्य है। डॉ. सिकरवार ने कहा कि इस सकंट के समय में कोरोना वायरस के कारण घर से भी निकलना मुष्किल हो रहा है, जब आप सभी ने अपनी जान की चिंता न करते हुये इस संकट की घड़ी में जो कार्य किया है, उसको सदैव याद रखा जायेगा। डॉ. सिकरवार ने कहा कि कोरोना वायरस के कारण जनता को काफी परेषानीओं का सामना करना पड रहा है। डॉ. सिकरवार ने कहा कि इन परिवारों की समस्या मैं नही देख सकता था, उसी वक्त मैने फैसला किया कि चाहे कुछ भी हो जाये इन परिवारों को भरण-पोशण की समस्या नही आने दूँगा और ये सब आप जैसे कर्म योद्धा के बिना करना आसान नही था। डॉ. सिकरवार ने कहा कि आप सभी के साथ मिलकर ललितपुर कॉलोनी के जाटव मौहल्ला, कोरिओं का मौहल्ला, कुषवाह मौहल्ला, इन्द्रगंज गऊघाट, पोटरीज रोड कम्पू, षहीद हरीसिंह की बस्ती, थौराठ की गोठ, नाकाचन्द्रवदनी क्षेत्र केंसर पहाडिया, गंजी खो, गड्ढा वाला मौहल्ला, बजरंग नगर, देवनगर, ओफे की बगिया, रानीपुरा, यादव कॉलोनी के सामने, रोषनी घर रोड, खटीक मौहल्ला, निर्धन नगर, विक्की फैक्ट्री को सम्पूर्ण क्षेत्र, षिवपुरी लिंक रोड के पास स्थित आदिवासी बस्तीयां, सिंधिया नगर, कुम्हरपुरा, थाठीपुर, मुरार का सम्पूर्ण क्षेत्र, हुरावली, जडेरूआँ गॉव, 60 फुट्टा रोड, भीनगर, अम्बेडकर नगर, नदी पार टाल का सम्पूर्ण क्षेत्र, दीनदयाल नगर के आस-पास की बस्तीयां एवं अन्य ऐसे क्षेत्र जहां जरूरतमंद परिवार निवास करते है, आप सब की मदद से ऐसे परिवारों को घर-घर तक राषन पहुँचाया गया है। डॉ. सिकरवार ने कहा कि आप सभी ने बहुत मेहनत की है और आप सभी की मेहनत के लिए मुझे आपका सम्मान करने में बहुत खुषी हो रही है। कर्म योद्धाओं का सम्मान करते हुये डॉ. सिकरवार के साथ पूर्व वरिश्ठ भाजपा राजेष्वर राव, भाजपा वीर सावरकर मण्डल अध्यक्ष जयंत षर्मा एवं सहसचिव अवधेष कौरव मौजूद रहे।

इन कर्म योद्धाओं का हुआ सम्मानः- प्रमोद जैन, पवन जैन, विजय बहादुर त्यागी, सुरेष प्रजापति, महेष कुषवाह, आषीश साहू, सुरेन्द्र साहू, रामकेष कौरव, गणेष सोनी, कौषलेष सिंह कुषवाह, प्रदीप कुषवाह, गिरिष गुप्ता, भुवनेष सारस्वत, गंगाराम प्रजापति, राजेन्द्र राठी, अभय कुमार सिंह, लोकेन्द्र प्रजापति, अंकित कठठ्ल, हिमांषु कीकन, राकेष श्रीवास, गौतम कदम, मनोज प्रजापति, दीपू यादव, अजीत राव, श्रीकांत सगर, वीरेन्द्र रावत, गौरव तोमर, विक्रांत सेंगर, सतेन्द्र जादौन 'सत्ते', मनीश त्यागी, रामसेवक बघेल, रमेषचन्द्र बैरबा, रामू प्रजापति, मुस्तफा खान आदि का सम्मान किया गया। कल होगा कर्म योद्धा सफाई कर्मचारीओं का सम्मानः- कल दिनांक 07.05.2020 को एम.एल.बी. कॉलेज मैदान में दोपहर 12 बजे कर्म योद्धा सफाई कर्मचारीओं का सम्मान किया जायेगा।

मानसून से पहले बाढ़ संभावित क्षेत्रों में करें पूरी तैयारी

ग्वालियर। प्रदेश में जुलाई से सितम्बर माह में मानसून के दौरान बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिये सभी इंतजामों को सुनिश्चित करने के लिये कमिश्नर और कलेक्टर को प्रमुख सचिव राजस्व द्वारा निर्देश जारी किये गये हैं। राजस्व विभाग द्वारा जारी निर्देश में कहा है कि ऐसे गाँव की संख्या और क्षेत्र जो वर्षाकाल में बाढ़ की दृष्टि से संवेदलशील क्षेत्र है को चिन्हित किया जाये। इसके साथ ही ऐसी नदियों जिनमें बाढ़ आती है उनकों भी चिन्हित करें। वह नदिया जो प्रदेश सहित अन्य राज्यों में बहती हैं उन पर भी ध्यान रखा जाये। बड़े तालाब और नाले जिनसे बाढ़ आने की संभावना रहती है, उनको भी चिन्हित किया जाये। सभी बड़े बाँधों की सूची तैयार की जाये और जल संसाधन विभाग से इन बाँधों को बाढ़ और अतिवृष्टि को ध्यान में रखकर किये गये सुदृढ़ीकरण के कार्य और जिले में बाढ़ आने के मुख्य कारणों की जानकारी एकत्रित कर शासन को भिजवाएं। जिले में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में स्थित प्राकृतिक जलाशयों और जल

प्रमुख सचिव राजस्व ने सभी कमिश्नर और कलेक्टर को दिये निर्देश

निकास की नालियों की साफ-सफाई, तालाबों से अतिक्रमण हटाने और तालाब, नालों और बाँधों के तटबंधों का निरीक्षण कर उनका सुदृढ़ीकरण भी किया जाये। बाढ़ की संभावना वाले क्षेत्रों में नागरिकों को सूचना देने के लिये व्यवस्थित प्रणाली बनाई जाये। बाढ़ और अतिवृष्टि के दौरान की जाने वाली आपातकालीन कार्यवाहियों के लिये जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन दल का गठन करें और जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन समिति की बैठके आयोजित की जाएं। आवश्यक सेवाएँ जैसे ऊर्जा, संचार, सड़क और पुल आदि के रख-रखाव की स्थिति की समीक्षा की जाये। सभी विभागों से बाढ़ से निपटने के लिये बनाये गये नोडल अधिकारियों के नाम, पता, दूरभाष, मोबाइल नम्बर, फैक्स और ई-मेल की जानकारी भी पहले से संकलित की जाए। बाढ़ प्रभावित होने वाले क्षेत्रों का आकलन कर क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुएँ दवाइयाँ आदि का पर्याप्त मात्रा में भंडारण सुनिश्चित किया जाये। इसके साथ ही बाढ़ की स्थिति में राहत शिविर लगाने की स्थिति पैदा होने पर शिविरों के लिये स्थान आदि भी पहले से तय करा लें। बाढ़ में राहत और बचाव में काम आने वाले उपकरण, नाव, मोटर बोट, रबर बोट आदि की तैयारी पहले से रखें।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। पुष्पांजली प्रिंटर्स-गोवर्धन कॉलेनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से मुद्रित एवं दीपू इलेक्ट्रोनिक्स, पंजीयन क्रमांक/ एम.पी.एच.आई.एन. /31130 नियर हनुमान मंदिर, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक - भरत सिंह चौहान E-mail : pushpanjalitoday17@gmail.com 0751-4901333, M.: 8269307478